

शहीद मंगल पांडे की जयंती

स्रोत: पी.आई.बी

प्रधानमंत्री ने 19 जुलाई को महान स्वतंत्रता सेनानी मंगल पांडे की जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

मंगल पांडे

- **प्रारंभिक जीवन:** उनका जन्म 19 जुलाई 1827 को उत्तर प्रदेश के बलिया ज़िले में हुआ था।
 - वह 22 वर्ष की उम्र में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना की 34वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री में शामिल हुए।
- **वद्रोह:** उन्होंने नवप्रवर्तित एनफील्ड पैटर्न 1853 राइफल-मस्केट का उपयोग करने से इंकार कर दिया क्योंकि सपिहियों का मानना था कि इसके कारतूसों में गोमांस तथा सूअर की चर्बी लगी हुई थी, जो हद्वि और मुस्लिम धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाती थी।
 - 29 मार्च 1857 को उन्होंने वद्रोह कर दिया और अपने वरिष्ठ सार्जेंट मेजर पर गोली चला दी।
- **उनकी कार्रवाई का प्रभाव:** उनके वरिष्ठ और वद्रोह की लहर को वर्ष 1857 का सपिही वद्रोह कहा गया, जिसे भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम भी कहा जाता है।
 - 7वीं अवध रेजीमेंट के सैनिकों ने वद्रोह किया, लेकिन उसे दबा दिया गया, जबकि असंतोष अंबाला, लखनऊ और मेरठ तक फैल गया।
 - 10 मई 1857 को मेरठ के सपिहियों ने वद्रोह किया, दिल्ली की ओर कूच किया और बहादुर शाह ज़फर द्वितीय को 'शहंशाह-ए-हिंदुस्तान' घोषित किया, जिससे वर्ष 1857 के वद्रोह को एक प्रतीकात्मक राष्ट्रीय नेतृत्व प्राप्त हुआ।
- **फाँसी और वरिष्ठ:** उन्हें 8 अप्रैल 1857 को बैरकपुर में फाँसी दी गई और उनकी रेजीमेंट को असंतोष प्रकट करने के कारण भंग कर दिया गया।
 - ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीय प्रतिरोध के प्रतीक बने, सपिहियों और किसानों की पीड़ाओं को दर्शाया तथा भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख व्यक्तित्व के रूप में मान्यता प्राप्त की।

1857 का विद्रोह

ईस्ट इंडिया कंपनी (EIC) के खिलाफ संगठित प्रतिरोध की पहली अभिव्यक्ति
भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग के कार्यकाल (1856-62) के दौरान घटित

विद्रोह का केंद्र	नेता	ब्रिटिश अधिकारी (विद्रोह का दमन)
दिल्ली	बहादुर शाह ज़फर	जॉन निकोलसन
लखनऊ	बेगम हज़रत महल	हेनरी लॉरेंस
कानपुर	नाना साहेब	सर कॉलिन कैपबेल
झाँसी और ग्वालियर	रानी लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे	जनरल ह्यूज रोज
बरेली	खान बहादुर खां	सर कॉलिन कैपबेल
बिहार	कुंवर सिंह	विलियम टेलर
इलाहाबाद और बनारस	मौलवी लियाकत अली	कर्नल ओनसेल

विद्रोह की विफलता:

- सीमित विद्रोह - रियासतों तथा दक्षिणी प्रांतों ने इसमें भाग नहीं लिया
- प्रभावी नेतृत्व का न होना
- सीमित संसाधन - लोग/सिपाही/सैनिक, धन और शस्त्र
- अंग्रेजी- शिक्षित मध्यम वर्गों, संपन्न महाजनों, व्यापारियों और बंगाल के जमींदारों ने विद्रोह को दबाने में मदद की

परिणाम:

- भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त हुआ
- भारत में ब्रिटिश राज का प्रत्यक्ष शासन
- वायसरॉय ने गवर्नर जनरल का स्थान लिया
- व्यपगत के सिद्धांत की समाप्ति - दत्तक पुत्रों को कानूनी उत्तराधिकारी के रूप में मान्यता दी गई
- ब्रिटिश अधिकारियों में भारतीय सैनिकों के अनुपात में वृद्धि हुई

विद्रोह के कारण:

- राजनीतिक - ब्रिटिश विस्तार नीति (व्यपगत का सिद्धांत)
- सेना - भारतीय सैनिकों के साथ हीन व्यवहार मुख्यतः उनके साथ जो किसान पृष्ठभूमि वाले थे,
- आर्थिक - किसानों पर अत्यधिक कर का आरोपण, राजस्व संग्रह के सख्त तरीके, ब्रिटिश वस्तुओं के आने से स्थानीय उद्योगों को क्षति
- सामाजिक-धार्मिक - पश्चिमी सभ्यता का तेजी से प्रसार, सती प्रथा और कन्या भ्रूण हत्या का उन्मूलन, पश्चिमी शिक्षा प्रणाली को लागू करना, भारतीयों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने संबंधी मान्यता
- तात्कालिक कारण - नई एनफील्ड राइफल के कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी लगाकर धार्मिक मान्यताओं का उल्लंघन करने की अफवाहें

1857 के विद्रोह पर लिखी गई पुस्तकें

- वीर सावरकर द्वारा लिखित 1857 का स्वातंत्र्य समर
- पूरन चंद जोशी द्वारा लिखित रिबेलियन, 1857: ए सिम्पोजियम
- जॉर्ज ब्रूस मैलेसन द्वारा लिखित हिस्ट्री ऑफ द इंडियन म्यूटिनी, 1857-1858
- क्रिस्टोफर हिब्वर्ट द्वारा लिखित द ग्रेट म्यूटिनी
- इकबाल हुसैन द्वारा लिखित रिलीजन एंड आइडियोलॉजी ऑफ द रिबेल्स ऑफ 1857
- खान मोहम्मद सादिक खान द्वारा लिखित एक्सकवेशन ऑफ ट्रूथ: अनसंग हीरोज़ ऑफ 1857 वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस



और पढ़ें: [वर्ष 1857 का विद्रोह](#)

PDF Reference URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/birth-anniversary-of-shaheed-mangal-pandey>